सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 30 अगस्त 2015, रविवार
(फरीदाबाद, सै0–10)

! राधा–स्वामी.!

मैं आपको नाम बता रहा था, नाम क्या होता है? नाम वो अवस्था है, राधा स्वामी की अवस्था, जब हमारी राधा (आत्मा) स्वामी के साथ मिल जाती है, उसे कहते हैं राधा स्वामी। राधा स्वामी कोई पंथ नही है, कोई धर्म नही है। ये राधा स्वामी शब्द आया कहाँ से? इसकी खोज किसने की? पहले स्वामी जी महाराज थे आगरा में, उन्होने सत्नाम कहा था, आखिरी अवस्था जो है वो सत्नाम है, लेकिन उनके एक खास शिष्य थे जिनका नाम राय शालिगराम था। वो एक दिन उनके पास आये और कहा– महाराज जी मुझे लगता है राधा स्वामी का जो नाम है सत्नाम इसे बदल कर आप राधा स्वामी कर दो। उन्होने पूछा आप कहाँ से लाये ये नाम? मैं कबीर साहब की पुस्तक पढ रहा था, उसमें मिला ये राधा स्वामी नाम। तो कबीर साहब का क्या शब्द था? उनका शब्द था–

कबीर धारा अगम की सतगुरू दिए बहाए।
ताहि उलट सिमरन करो, स्वामी संग लगाए।।

पहले सतगुरू ने हमारे लिए सारी व्यवस्था की, धरती पर पहले पानी ले आया, फिर हवा ले आया, वनस्पति ले आया, फिर पशु पक्षी ले आया, जब मनुष्य के लिए सारी व्यवस्था हो गई, तब उसने एक विशेष धारा लिकाल कर, हम सुरतों को धरती पर उतार दिया। नही तो हम कहाँ से आये, ये सोचने की बात है। जब ये धरती बनी, ये सूरज का एक हिस्सा था। जितना तापमान सूरज में है उतना ही तापमान धरती पर भी था। धरती एक आग का गोला था। तो क्या हुआ? धीरे–2 ये ठण्डी होने लगी, कई करोडो साल लग गए इसको ठण्डा होने में लेकिन अभी भी ठण्डी नही हुई है, अंदर अभी भी उतना ही तापमान है। कभी–2 ज्वालामुखी फट के निकल आता है और सबका विनाश कर देता है। पत्थर भी पानी जैसे पिघल आते हैं। तो वो तापमान अभी भी है, ऊपर–2 ठण्डा हो गया। क्यों? क्योंकि मालिक मनुष्य के लिए एक व्यवस्था बना रहा था। पहले मालिक सब चीजें ले आया, किसके लिए? मनुष्य के लिए और किसी के लिए नही। क्या आपने कभी देखा है कि बंदर गुलाब का फूल सूँघ रहा है? नही देखा होगा, क्योंकि गुलाब का फूल मनुष्य के लिए बना है। शिमला मनुष्य के घूमने के लिए बना है। ये सारा सौंदर्य, ये प्रकृति सब मनुष्य के लिए बना है। जब ये व्यवस्था पूरी हो गई तो मालिक ने एक विशेष धारा निकाली और हम सुरतों को धरती पर उतार दिया। कबीर साहब कहते हैं इस धारा को उल्टा करो, धारा को राधा बनाओ। पहले मैने आपको बताया जो चीज जहाँ से निकलती है उसको चिंता रहती हैं, कब मैं उस भंण्डार में समा जाऊ। तो हमारी आत्मा कहाँ से आई? उस मालिक से आई, तो हमें हमेशा चिंता रहती है, हम मालिक के पास जाएँ। क्योंकि Law of Nature है, प्रकृति का कानून है, जो चीज जहाँ से आई है उसे वही जाना है। तों हम मालिक के भंडार से निकले और हमें वापिस वहीं जाना है। कैसे? कबीर साहब कहते हैं इस धारा को पकड कर वापिस आ जाओ। इसे कहते हैं मीन मार्ग, मछली का मार्ग। आपने कभी सुना है कि आसमान से मछलियाँ गिर रही हैं? ऐसा हुआ है, कभी–कभी आसमान से मछलियाँ गिरती हैं। कैसे? मछली में एक विशेष खाशियत है कि वो पानी के विपरीत (उल्टा) चल सकती है। यानि कहीं झरना है और झरने से पानी नीचे गिर रहा है, वो नीचे की मछली जो है उस झरने को पकड कर ऊपर जा सकती है। जब जोर से बारिश होती है मूसलाधार, तो तालाब में जो मछलियाँ होती हैं वो बारिश की धारा को पकड कर ऊपर चलती हैं और बादलों में फँस जाती हैं और बादल उनको कहीं दूसरी जगह ले जाकर गिरा देते हैं। हम समझते हैं बारिश में मछलियाँ आ गई। इसको बोलते हैं

मीन मार्ग, इसी मीन मार्ग को पकडो, मछली बनो। जिस धारा से तुम आये हो उसी धारा को राधा करो और अपने मालिक के पास जाओ। लेकिन ये तुमसे अकेले होगा नही, इसलिए स्वामी संग लगाओ। स्वामी कहते हैं जो आज आपके सामने गुरू है। उसकी मदद ले लो, उसका सहारा ले लो और उस धारा को पकड कर मेरे पास आ जाओ। कबीर साहब हैं– धारा को राधा बनाओ और स्वामी संग लगाओ, तो क्या बन गया, राधा स्वामी। तो प्रश्न ये था कि राधा स्वामी शब्द कहाँ से आया? जब स्वामी जी महाराज थे आगरे में, उन्होने सत्नाम शुरू किया था, लेकिन उनके एक शिष्य थे राय शालिगराम, वो एक दिन आये थे उनके पास कि महाराज जी सतनाम को मैं बदलना चाहता हूँ, इसको मैं राधा स्वामी करना चाहता हूँ। तो स्वामी जी महाराज ने पूछा– राधा स्वामी कहाँ से लाये? तो उन्होने कहा मैंने कबीर साहब का एक शब्द पढा जिसमें धारा को राधा करो, स्वामी संग लगाओ, तो राधा स्वामी बन जाता है और वही हमारा धर्म है और वहीं मालिक के पास जाना है हमें एक दिन। स्वामी जी महाराज ने कहा– मैं कल बताऊँगा। रात को वो ध्यान में गए और ध्यान में उनको समझ आया हाँ ये ठीक है। शुबह शालिगराम को बुलाया और कहा– आपने जो कहा कि सतनाम को बदलकर राधा स्वामी कर दो, ये ठीक है। आज से इसका नाम राधा स्वामी, तो बन गया राधा स्वामी। राधा बन गई हमारी आत्मा, स्वामी हो गया आत्मा का भंडार। जब हमारी आत्मा, आत्मा के भंडार से मिल जाती है, तो राधा मिल जाती है स्वामी के साथ, तो बन जाता है राधा स्वामी। तो आप समझ गए राधा स्वामी क्या है? राधा स्वामी कोई मजहब नही है, राधा स्वामी कोई पंथ नही है, कोई भी राधा स्वामी बन सकता है। एक मुसलमान भी राधा स्वामी है, एक क्रिस्चयन भी राधा स्वामी है, क्यो? क्योंकि उसकी आत्मा भी एक दिन मालिक के पास जाएगी। राधा स्वामी एक अवस्था हैं, जो हमको प्राप्त करनी है। जब हमारी आत्मा उस आत्मा के भंडार से मिल जाएगी, हमको वो अवस्था मिल जाएगी।

! राधा स्वामी !